EHJ-1-HI

क्या इतिहास का यीशु विश्वास का यीशु है? प्रोग्राम – 1

अनाऊंसर: ऐतिहासिक यीशु की खोज आज विख्यात और पढाई के संसार में बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हो गया है, और इसने नैशनल मैगज़ीन से बहुत ध्यान आकर्षित किया, जैसे की टाइम, न्यूज़ वीक और यु एस न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट/ साथ ही मिडिया ने जीजस सेमीनार के इन वाक्यों कि बहुत ज्यादा महत्व दिया है, खुद को चुननेवाले लिबरल ग्रुप ने नए नियम की वुद्धिमत्ता को बहुत कम प्रतिशत दिए हैं/

आज हम ऐतिहासिक यीशु के विवादों पर आधारित सवालों के जवाब देंगे, और यीशु के बारे में बहुत ऐतिहासिक सच्चाई हैं ये बात दिखाएंगे, संसार के और नए नियम को छोड़ दूसरे स्रोतों से, जो ये दिखाते हैं कि इतिहास का यीशु मसीही विश्वास का ही यीशु है/

मेरे मेहमान हैं, संसार के महान फिलोसोफर डॉ. गैरी हैबरमास, ये द हिस्टोरिकल जीजस किताब के लेखक हैं, इन्होने म इशिग्न स्टेट यूनिवर्सिटी से पी एच डी की हैं, और दूसरी डॉक्टरेट डिग्री इम्मानुएल कॉलेज, ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लैंड से की हैं, डॉ. हैबरमास लिबर्टी यूनिवर्सिटी के फिलोसोफी और थियोलोजी के डिपार्टमेंट के चेअरमैन हैं, और इन्होने यीशु के जीवन पर 100 से भी ज्यादा लेख लिखे हैं, जो बहुत से बुद्धिमत्ता के जरनल में आएं हैं/

हमारे साथ द जॉन एन्करबर्ग शो के इस एडिशन में जुड़ जाए और और सीखे कि क्यों यीशु ऐतिहासिक समय में सबसे ज्यादा देखा जानेवाला व्यक्ति है/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: स्वागत है, यदि आप यीशु के बारे में आर्टिकल्स को पढ़ते हैं, नैशनल मैगजीन में जैसे कि टाइम, न्यूज़ वीक या यु एस न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट, आप जानते हैं कि मसीहियत की सच्चाई के दावों पर हमला होता है, विद्वानों का लिबरल ग्रुप जिसे जीजस सेमीनार कहते हैं, उन्होंने अपने निश्कर्ष को बताते हुए कहा है, परमेश्वर मरा हुआ है, ये सोचना सही नही है कि यीशु परमेश्वरीय है, यीशु मुर्दों में से नही जी उठा, और नया नियम मसीहियत को लाने की बड़ी कोशिश है/ दूसरे शब्दों में यदि आप विश्वासी हैं और मानते हैं कि यीशु परमेश्वर है, कि उसने सुसमाचार में कही हुई बातें कही हैं, और वो क्रूस पर मरा, और मुदों में से जी उठा, तो वो कह रहे हैं कि आपका विश्वास सही नही है, और कोई ऐतिहासिक सबूत नही हैं, जो आपके विश्वास के साथ मिलते हो, मैं चाहता हूँ कि आप जान ले कि ऐसे वाक्य पूरी तरह से गलत हैं/

आज मेरे मेहमान हैं डॉ. गैरी हैबरमास, इनके पास 2 डॉक्टरेट डिग्री हैं, और इन्होने यीशु के जीवन पर 100 से भी ज्यादा बुद्धिमत्ता के लेख लिखे हैं/ मैनें गैरी से पूछा कि जीजस सेमीनार के इस वाक्य के बारे में वो क्या सोचते हैं, और उन्होंने यही कहा

डॉ. गैरी हैबरमास: ये मुख्य धारा नही हैं और वो सबसे आधुनिक बातों को नही बताते हैं, इन बातों के बारे में मैं कहूँगा कि हम खुद को इससे जोड़ते हैं, जो इतिहास कहता है, हम ऐसी परिस्थिति में आते हैं, जहाँ यीशु के बारे में बहुत कुछ हैं, कि दरजन और दरजन सच्चाई हैं, उसके जन्म के बारे में, उसका जीवन, उसकी शिक्षा, उसकी मृत्यु, परखा जाना, सबकुछ, उसका गाढ़ा जाना और खासकर उसका जी उठने का प्रकटीकरण, और

हमारे पास इस परमेश्वर के बारे में जानकरी की कमी नही है/ हम इन बातों को नए नियम और उसके बाहर भी देखते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब, जीजस सेमीनार ने ऐसा बेबुनियाद वाक्य कहा वो तो ये है, कि पारंपारिक मसीही विश्वास के लिए कोई भी असली ऐतिहासिक सबूत नही है, ये तो पूरी तरह झूठ है, डॉ. हैबरमास कुछ अलग स्रोतों को बताते हैं, जिसमे यीशु के बारे में ऐतिहासी सच्चाई पाई जा सकती है/ सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: खैर, जब भी सच्चाई की बात आती है तो नया नियम हमेशा यीशु के ऐतिहासिक होने बारे में सबसे अच्छा स्रोत है और हमेशा रहेगा/ और हम इस पर कह सकते हैं, लेकिन मैं सोचता हूँ कि नया नियम तो बुनियादी रूप में देखते जाना चाहिए, ऐसे नही कि बस भरोसेमंद अप्रोच के रूप में देखे/

लेकिन मैं सोचता हूँ कि नए नियम के परे, हमें नए नियम से बाहर के दावों को भी देखना चाहिए, हमें नए नियम के बाहर के डेढ़ दरजन से भी ज्यादा स्रोतों को देखना चाहिए, आर्कियोलोजि भी यहाँ कुछ जोड़ने की कोशिश करती है, जब हम इन सबको जोड़ते हैं तो हमारे पास बहुतसी जानकारी हैं, यीशु और पहली सदी में उसके जीवन के बारे में/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब जीजस सेमीनार दावा करता है, कि नए नियम के डाक्यूमेंट्स यीशु की जीवनी की ऐतिहासिक घटना नही है/ लेकिन ये उसके बारे में थियोलोजिक्ल बातें हैं, डॉ. हैबरमास बताते हैं कि दूसरे ऐतिहासीक लेखों में भी थियोलोजिक्ल विचार हैं, लेकिन वो ऐतिहासिक बात बताने के कारण अलग नही किए गए हैं, क्यों नही? मैं चाहता हूँ कि आप सुनीए

थिसेस में एक समस्या बताते हैं कि नए नियम के लेखक थियोलोजियन थे, इसलिए उन्होंने इतिहास नही बताया, याने उस समय के इतिहासकार याने ग्रीक-रोमन इतिहासकार हैं, और इतिहास का इतना अच्छा विवरण और कही नही है, और कोई लेख नही जहाँ लोग तो केवल बहुत विद्वान् इतिहासकार हैं, सच्चाई ये है कि यदि टैस्टस का अध्यन करे, या सोटोनियस को देखे, या प्लिनी को देखे, या दूसरों को देखें, ये रोमी इतिहासकार, विख्यात हैं और ओमनस को भी देखिए, और चमत्कार के लेख और इनके इतिहास की दूसरी बातें, टैस्टस को रोमन राज घराने के व्यक्ति के रूप में जाना जाता है, सोटोनियस नही कह सकते ओमेन्स और कैसर के राज्य को बताए बिना, कि उन्होंने इस तरह और उस तरह काम किया, इतिहासकार उनके बारे में क्या कहते हैं? वो कहते हैं हाँ वो अलग हैं, ये लोग इतिहासकार हैं और थियोलोजी नही कहना चाहते, लेकिन वहां थियोलोजी है/

मैं सिद्धान्त से कहता हूँ, केवल इसलिए कि नए नियम में थियोलोजी के बारे में कहने के लिए कुछ है, तो इस बारे में कुछ नही कहा गया कि वो इतिहास के बारे में बता सकते हैं या नही/ नए नियम में बहुत ज्यादा डेटा है, और मैं सोचता हूँ कि आज बहुत से विद्वान् इस बात को मानते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब, जीजस सेमीनार दावा करता है, कि मत्ती, मरकुस, लूका और युहन्ना ने सच में अपना सुसमाचार नही लिखा, आगे ये सेमीनार कहता है कि सुसमाचार में जो कुछ यीशु ने कहा ये लिखा है उसमे से केवल 18 प्रतिशत भाग ही उसने कहा है, तो इसके बारे में क्या, डॉ. हैबरमास बताते हैं कि पारंपारिक लेखक जैसे मत्ती, मरकुस, लूका और युहन्ना, सुरक्षित रख सकते हैं, नंबर दो आज के दोष निकालनेवाले विद्वान् ने मान है कि सुसमाचार के कुछ भाग ऐतिहासिक रूप में सच हैं, और नंबर तीन यदि आप उन सबूतों को लेते हैं, तो आप आसानी से यीशु के बारे में पारंपारिक विश्वास को सुरक्षित रख सकते हैं/ सुनिए

डॉ. गैरी हैबरमास: चलिए सुसमाचार के लेखक के बारे में मैं 3 बात कहता हूँ, पहला है कि मैं सोचता हूँ कि पारंपारिक लेखक, मत्ती, मरकुस, लुका, युहन्ना, अच्छी शक्ति के साथ सुरक्षित रह सकते हैं, लेकिन कनटेम्पररी अपोलोजेटिक में आर टी फ्रेन्स कहते हैं उदाहरण के लिए,कि यदि समय निकालकर बैठकर हर पारंपारिक लेखक के बारे में न देखे, तो भी सुसमाचार के सटीक होने के बारे में इस बुनियाद पर कह सकते हैं, रोमी इतिहास के लिए भी हम यही करते हैं, ये तो अब भी शुरू की कहानी हैं, शुरू की कहानी है, यीशु के बारे में, और फिर भी हम ये कह सकते हैं कि हमारे पास शुरू के डाटा का यही भाग है/

चलिए तीसरे तरीके को देखते हैं याने पारंपरिक लेखक हैं, और शुरू की किताबें हैं, जिस में मसीह का पूरा जीवन है, लेकिन तीसरी बात है कि ऐसे अपोलोजेटिक का भाग है, जो इसे थामता है, जो ये नही कहता कि ये सारी किताबे ऐतिहासिक हैं और इनकी सारी बातें सच हैं, मैं थोड़ी जानकारी को लेता हूँ, अब आज, मैं अपने विद्यार्थियों को बार बार कहता हूँ, दोष निकालनेवालों के लिए वो पौलुस को रखते हैं और सुसमाचार को बाहर करते हैं, जब कि विश्वासीयों के लिए पौलुस और सुसमाचार तो वचन हैं, लेकिन यदि वो पौलुस को रखते हैं, तो क्यों न पौलुस को लेकर केस बनाए, और मैं चाहता हूँ कि कुछ सच्चाई को लेकर, उसके आस-पास डेटा बनाते जाए, और दिखाई कि हम केवल इन कुछ सच्चाई के आधार पर अपनी केस बना सकते हैं/

पौलुस के लेखों का ऐसा भाग है जिसे ऐतिहासिक बात के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, चलिए इसके कुछ उदाहरण देखते हैं, जी ए वेल्स, जो जर्मन के ब्रिटिश प्रोफेसर थे, जिन्होंने कई किताबें इस बहस पर लिखी कि शायद यीशु कभी जीवित ही नही था, जी ए वेल्स फिर भी मानते थे पौलुस के 8 अधिकारिक पत्रियों को, अब ये उन लोगों के लिए काफी नही होगा, जो 13 चाहते हैं, लेकिन जो नही दिए उसके बारे में नही देखते हैं और जो दिए हैं उसे देखते हैं, इन 8 में सिद्धान्त के महत्वपूर्ण बातें दी गई हैं, खासकर रोमियों, पहला और दूसरा कुरिन्थियो, गलातियों और फिलिप्पियों, वो ये सब देते हैं, याने जब कि पौलुस ने ये बताया है, तो जी ए वेल्स जैसे लोग जो कहते हैं कि यीशु कभी था ही नही, तो पौलुस को चुनते हैं, और हम यीशु के जी उठने के बारे में कहते हैं, और स्वाभाविक सुसमाचार देखते हैं और पहला कुरिन्थियों 15 से देखते हैं, गलतियों अध्याय 1 से देखते हैं, ऐसे वचन जो बहुतायत से दिए गए हैं, और यही तो खास बात है कि नया नियम हमें ये सटीक डेटा देता है, जब हम इसे देखते हैं कि इसे घटाया नही जा सकता, या इससे और कुछ अलग नही घटा सकते, तो हमारे पास बहुतसा डेटा है कि इतिहास के यीशु के बारे में चर्चा करें/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब जीजस सेमीनार के कुछ लोग सोचते हैं कि प्रेरित पौलुस ने यीशु के परमेश्वर होने की बात का आविष्कार किया, याने पौलुस का यीशु तो ऐतिहासिक यीशु से पूरी तरह अलग है, तो कौनसे ऐतिहासिक सबूत साबित करते हैं कि पौलुस ने यीशु का अविष्कार नही किया, इसके बजाए उसने और दूसरे प्रेरितों ने यीशु को उसी तरह से देखा, और वही संदेश प्रचार किया, सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: एक बहुत ही भरोसेमन्द डेटा जिसे दोष निकाल्नेवालों का समूह बिना विवाद के स्वीकार करता है, वो है पहला कुरिन्थियो अध्याय 15, अब पहले 2 वचनों में पौलुस कहता है, मैं तुम्हारे पास आया, कुरिन्थियो, मैंने तुम्हें सुसमाचार प्रचार किया,वो व्यक्तिगत रूप में आता है और प्रचार करता है, हम इसवी सन 51 की बात कर रहे हैं,वो कहता है मैं ने सुसमाचार का प्रचार किया और तुमने उस पर विश्वास किया, और उद्धार पाया, यदि नही किया तो उद्धार नही पाया/

फिर वो कहता है, या उन्हें बताता है कि सुसमाचार क्या है, वो वचन 3 में कहता है/ इसी कारण मैंने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी., जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाढ़ा गया और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा, और कैफा और बारहों को दिखाई दिया, फिर कुछ और प्रकटीकरण के बारे में बताता है कहता कि अंत में मुझ पर प्रकट हुआ/

याने ये तो स्पष्ट में से एक है, यदि ये नए नियम में सुसमाचार के स्वभाव के गुण के बारे में सबसे स्पष्ट नही है, तो फिर इसे इतनी गंभीरता से क्यों लिया गया है? सबसे पहले ये तो ऐसी किताब है जिसके बारे में सोचा जाता है कि ये पौलुस ने लिखी है, ये ऐसा क्यों है? खैर, जैसे एक विद्वान् ने कहा, हमें यहाँ पौलुस के अधिकार पर चर्चा करनी नही चाहिए, क्योंकि भीतरी और बाहरी सबूत बहुत मजबूत हैं, किस तरह से, जानते हैं, इसवी सन 100 तक, याने 100 के पहले ही, क्लेमेन्ट ने इसवी सन 95 में, और फिर 100 के बाद, पोली कैप, 107 में, इगनेशियस 110 में, इन तीन लोगों ने 9 छोटी पत्रियाँ लिखीं, जिसमे पौलुस के अधिकार के बारे में पौलुस के लेख से बाहर की बहुत सी सहमती के स्रोतों को देखते हैं/

ये तो बहुत से कारणों में से एक हैं लोगो मानते हैं, दोष निकालनेवाले भी, पौलुस प्रेरित होने के नाते विश्वास करता था कि उसने यीशु को देखा, तो उसने कहा कि वचन के अनुसार वो गाढ़ा गया और तीसरे दिन जी उठा, हमें इसे गंभीरता से लेना होगा, इस कारण के लिए, ये पूरी तरह से माना जाता है, ये देखा जाता है, कि पौलुस ने कम से कम विश्वास किया, कि उसने जी उठे यीशु को देखा है, यही पूरा फर्क लाता है, तो हम उसे देख रहे हैं जो शुरू से था, जो दूसरे प्रेरितों को जानता था,वो सुसमाचार को दोहराता है, पहला कुरिन्थियो 15:11 में, वो कहता है सो चाहे मैं हूँ, या चाहे वो हो, इससे फर्क नही पड़ता, हम वही सुसमाचार प्रचार करते हैं, पौलुस ने बड़ी सावधानी से कहा, हमें ये गलतियों 1 वचन 2 में बताया गया है/ उसने सटीकता से कहा कि ये वही सुसमाचार है जिसका चेले प्रचार कर रहे थे/

सी एच डोड ने कुछ इस तरह से कहा, उन्होंने कहा कि सुसमाचार के बारे में पौलुस ने जो कहा है वो सुसमाचार के बहुत ही करीब है, उन्होंने कहा ये ऐसा सोता है जो मुख्य नदी के बहुत करीब है, और कहा कि जो भी इस पर बहस करना चाहता है, उन्हें अपने थिसेस के लिए इसके सबूतों के भार को उठाना होगा/ पौलुस ने हमने यहाँ शुरू में ही इसका लेखा दिया है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: मैं चाहता हूँ कि आप याद रखे कि जीजस सेमीनार दावा करता है, कि विश्वासियों के पास कोई सबूत नही हैं, यीशु के जीवन, मृत्यु और जी उठने के बारे में/ और प्रेरित पौलुस ने मसीह के ईश्वरत्व की मनघडत बात बनाई, लेकिन वो गलत हैं, 1 कुरिन्थियो 15 से पौलुस के ये शब्द, जिसे सब दोष निकालनेवाले विद्वान स्वीकार करते हैं, ये हमें मसीह के बिलकुल पास ले जाते हैं, इस समयकाल को देखिए, सन 30 में यीशु मरा, उसके कुछ समय के बाद पतरस, याकूब और दूसरे प्रेरित यीशु के जी उठने और परमेश्वर होने के बारे में प्रचार करते हैं, फिर सन 32 में पौलुस दमिश्क के मार्ग पर जी उठे मसीह से मिलता है, और विश्वासी बनता है, फिर सन 35 में, पौलुस यरूशलेम जाता है कि प्रेरित पतरस और याकूब से मिले कि अपना सुसमाचार जाँच लें कि देखे कि उसके संदेश में मसीह के बारे में वही सच्चाई है, जो यीशु के जीवन, मृत्यु और जी उठने को देखनेवाले भी प्रचार कर रहे हैं, उन्होंने उसे हाँ कहा/

फिर सन 51 में, पौलुस कुरिन्थियो में जाकर उन्हें सुसमाचार प्रचार करता है, और वहां बहुत से लोग विश्वस करते हैं, सन 55 में पौलुस 1 कुरिन्थियो किताब लिखता है, और उन सच्चाईयों को लिखता है जो उसने यीशु के बारे में दूसरे चेलों से पाए हैं, और वो जानता था कि ये सच है, अब ये सारी जानकारी बताते हैं कि पौलुस ने मसीह के ईश्वरत्व के बारे में मनघडत बात नही कही, लेकिन वोउसी संदेश के साथ सहमत था जिसे पतरस और याकूब प्रचार करते थे, सच बात तो ये है कि पौलुस ने आकर प्रचार करने के बहुत पहले ही पतरस और याकूब वही प्रचार कर रहे थे/ तो पौलुस ने ये मनघडत नही बनाया, डॉ. हैबरमास बताते हैं कि ये ऐतिहासिक सच्चाई यीशु के बारे में एक मजूबत नीव रखते हैं, जिसका इनकार नही कर सकते हैं, तो सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: चलिए देखते हैं कि ये इतिहास के रूप में इतना महत्वपूर्ण क्यों है, पहला कुरिन्थियो 15 तो बताया गया है,कुछ लोग जैसे जे ए वेल्स और माइकल मार्टिन, जो कहते हैं कि शायद यीशु कभी नही था,

पौलुस कहता है कि मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूँ जो मैंने पाया है, मसीह हमारे पापों के लिए मरा, गाढ़ा गया, तीसरे दिन जी उठा/

अब ये इतना महत्वपूर्ण क्यों है, अब चलिए इसे समयकाल में देखते हैं, कल्पना कीजिए कि मेरे दोनों हाथो में, 25 साल का काल है, सन 30 में यीशु का क्रूस, सन 55 से 57 तक, पहला कुरिन्थियो लिखा गया, कोई फर्क नही पड़ता यदि आप लिबरल हो या कसरवेटीव हो, ये समय तो 1 या 2 साल के बिच का ही होगा, अब पौलुस ने इसे सन 57 में लिखा, उसने कहा कि जो मुझे पहुचा वो मैंने तुम्हें पहुंचा दिया, ये कब हुआ सन 51 में, अब ये करीब आता है, 25 साल से 20 साल में, सन 50 से 51 में/

फिर कहता है कि मैंने जो पाया वो तुम्हें पहुचता हूँ, अब बड़ा सवाल ये है कि पौलुस को ये सब कब पहुचा,और उसने ये किस से पाया, यहाँ 5 कदम हैं, किताबें, मुंह की गवाही, और फिर यहाँ क्रूस है, और 2 और बाकी हैं, पौलुस ने किस से पाया, कब पाया, और उसके पहले उन लोगों के पास ये था/

अब विद्वान् और दोष निकालनेवाले, नॉन- इवेंजेलिक्ल, इसके जवाब में आराम से कहते हैं, पौलुस ने ये बातें यरूशलेम से पाई, पतरस और यीशु के भाई याकूब से, सन 35 के आस पास/ उसे ये कैसे मिला?

खैर, यदि क्रूस सन 30 में हुआ, तो पौलुस ने विश्वास किया कि उसने जी उठे यीशु को देखा है, याने 1 या 2 साल बाद,उसने गलातियों 1 में कहा, जिसे पौलुस की किताब मानते हैं, वो 3 साल के लिए गया और दमिश्क में वापस आया, और यरूशलेम गया, 3 और 2 याने 5 साल, यदि उसने 1 साल बाद उद्धार पाया, याने 1 और 3 याने 4 साल के बाद, लेकिन सन 35 अच्छा राउंड फिगर है, क्रूस सन 30 में, किताब सन 57 में लिखी, मुंह की गवाही सन 51 में, उसने कहा कि वो यरूशलेम में आया, सन 35 में, उसने कहा कि मैंने 15 दिन बिताए, पतरस और यीशु के भाई याकूब के साथ/

अब यहाँ ग्रीक शब्द है, एक अनुवाद कहता है कि उसने पतरस से पहचान की, या उसने पतरस को देखा, या उसने पतरस से सवाल पूछे, यहाँ ग्रीक शब्द है हिस्टेरियो, मुख्य शब्द है हिस्टोर, हिस्टोर इस तरह उच्चारण कर सकते हैं, और इसी से इतिहास शब्द आता है, इतिहास तो नए नियम से बाहर डॉक्यूमेंट का उपयोग करता है,उस समय के ग्रीक विचारधारा के अनुसार, इसका उपयोग किया कि देखे, और जो लोग मैपिंग कर रहे थे, चलिए उदाहरण के लिए देखिए नदी, जब मैं इस नदी का नक्शा बनाऊंगा तो क्या करूंगा, मैं इसकी मोड़ दिखाऊंगा,उसके बहाव को दिखाउंगा, उथला भाग जहाँ नाव ले जा सकते हैं, गहरा भाग और फिर उसके बिच की चट्टाने,पेड़ और सबकुछ, इसे हिस्टोर कहते हैं/

एक क्रिटिकल जो कि नॉन इवेंज्लिक्ल हैं, जिसे कई बार इस एक वचन के बारे में अधिकारी रूप में गलतियों 1:18 पर कहते हैं, ये कहता है कि पौलुस ने जाँच करनेवाले रिपोर्टर का काम किया, अब यदि वो यरूशलेम गया, सन 35 में, और पतरस और यीशु के भाई याकूब से मिला, और खोज करनेवाला रिपोर्टर बन गया, तो एक और बात सीखनी होगी, उन्होंने क्या चर्चा की, जैसे लिटररी क्रिटिसिज्म का पुराना नियम है, हम वचन का भाग और उसके सन्दर्भ का अर्थ लगाते हैं, उसके पहले के भाग से और उसके बाद के भाग से, जिसमे पौलुस सुसमाचार के स्वभाव के बारे में कहता है/

और शायद आप ये कहे कि इससे बढकर किस पर चर्चा करें, सुसमाचार के स्वभाव को छोडकर, वो दूर दूर जाता है और यरूशलेम आता है, और मुख्य प्रेरितों से मिलता है, यीशु के भाई से मिलता है, तो आपका सबसे पहला सवाल क्या होता? मतलब समान्य रूप में पौलुस ने सुसमाचार के बारे में पूछा होगा, यही तो सन्दर्भ है, और पौलुस कहता है मुझे बताइए, कि यहाँ पर क्या हुआ था?

अब अध्याय 2 में, जब वो 14 साल बाद वापस आता है, वो खासकर कहता है कि मैं अपना सुसमाचार जांचने के लिए आया हूँ, वचन 2, गलातियों 2:2, मैं देखने के लिए आया कि क्या मैं दौड़ रहा हूँ, या व्यर्थ में दौड़ा हूँ/

याने अब पौलुस इन प्रेरितों से मिलता है, जैसे वचन आगे ये कहता है, उसे संगती का सही रूप दो, देखो पौलुस तुम सही जगह हो, यीशु ने तुम्हें दमिश्क के मार्ग पर बुलाया, उसने तुम्हें अन्यजाती के लिए सुसमाचार दिया, तो जाओ, उन्होंने सामान्य रूप में यही किया/

अब यहाँ असली बात पर आए, 1 कुरिन्थियो सन 57 में लिखा, पौलुस ने सन 51 में प्रचार किया, क्रूस सन 30 में, याने ये केवल 20 साल के अदर हुआ, याने बहुत शुरू में, पौलुस को ये और किसीसे मिला, शायद पतरस और याकूब से सन 35 में, अब पतरस और याकूब ये इसे पौलुस को दिया, उनके पास ये पौलुस से पहले था/ लेकिन कोई तारीख नही बताता, जब ये डाटा सही तरह रखा गया, 1 कुरिन्थियो 15, जानते हैं क्यों? ये सब क्रूस पर ही था, पौलुस इसे 5 साल बाद पाता है, याने ये दिखाता है कि पुनरुत्थान की घोषणा और सुसमाचार परिपूर्ण है, जिसमे ईश्वरत्व है,और यीशु की मृत्यु और जी उठना है, ये घोषणा तुरन्त ही हुई थी/

देखिए बहुत से इवेंजेलिक्ल भी लडखडाते हैं जब वो कहते हैं, जी हमने तुरंत ही प्रचार किया, हमने इसे 1 कुरिन्थियो में पाया कि 25 साल बाद, तो क्यों न कहे कि पौलुस ने इसे शायद 5 साल बाद पाया, और उसके पहले ये और किसी के पास था/

अब ये तो इस सच्चाई के लिए एक मार्ग है, कि सुसमाचार के लिए जो सन्दर्भ है, खासकर यीशु का ईश्वरत्व, मृत्यु और जी उठना, ये तो मजबूत ऐतिहासिक सबूतों के साथ जुडा है, और दोष निकालनेवाले आपको वो वचन बताएँगे, गलातियों 1, गलातियों 2 में, 1 कुरिन्थियो 15 में, फिर कहूँ कि मैं शुरू में यही बता रहा था, ये तो मुख्य सबूत हैं कि हम मजबूत ऐतिहासिक जगह पर हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब, यदि आप गैर-मसीही हैं तो मैं पूछता हूँ कि आप क्या सोचते हैं कि मसीहियत कैसे शुरू हुई? शुरू के विश्वासियों ने यरूशलेम के लोगों के सामने कैसे दावा किया, वही नगर जिसने यीशु को क्रूस पर मरते हुए देखा, वो यीशु अब जीवित है, मैं यही कहना चाहता हूँ कि यीशु के जी उठने के बारे में मजबूत ऐतिहासिक सबूत हैं, इसे अनदेखा नही कर सकते हैं, सच्चाई गायब नही होती, ये मजबूत बुनियाद है, यदि आप निर्णय ले तो ये आपके लिए विश्वास का समर्पण होगा/ डॉ. हैबरमास सारांश देते हैं

डॉ. गैरी हैबरमास: जी, मैं सोचता हूँ कि ये कहना सही विचार होगा जैसे मैंने प्रोग्राम में शुरू में कहा था, कि हमारे पास अच्छी बुनियाद है, अब मैं कह रहा हूँ, ये मसीहियत की बुनियाद है, यीशु मसीह की मृत्यु, गाढ़ा जाना और जी उठना, यदि हम इसे समयकाल में रखे, कि पौलुस इसके बारे में कहता है, याने सन 35 के लगभग, जिसमे दो मुख्य लोग हैं, पतरस जो मुख्य प्रेरित था, यीशु का भाई याकूब था, जो यरूशलेम के चर्च का पास्टर था, ये मजबूत बुनियाद है और ये इस तरह से है, जो मुझे चकित करता है, जब मैं लोगों को कहते सुनता हूँ, देखो, यहाँ कोई सबूत नही हैं, मैं सुननेवाले व्यक्ति को निश्चित करना चाहता हूँ, खैर, जानते हैं क्या हमें इन लोगों की सुनना चाहिए, जो कहते हैं, कि कोई ऐतिहासिक बुनियाद नही है और हम कुछ नही पा सकते हैं, तो उन्हें यहाँ इस तरह के डेटा को देखने दिजिए, पहला कुरिन्थियो 15 और गलातियों 1 और 2 से, ये सुसमाचार के लिए मजबूत बुनियाद है/

देखिए मैं यहाँ आपको फिर से याद दिला दूँ, हम यहाँ मनघडत बातों के बारे में नही कह रहे हैं, हम विश्वास के केन्द्र के बारे में कह रहे हैं, पौलुस कहता है कि वो जी उठे यीशु से मिला है, दमिश्क के मार्ग पर और वो पतरस और याकूब से बातें करता है, 14 साल बाद वापस आता है, वो देखना चाहता था कि वो दौड़ रहा है या व्यर्थ दौड़ रहा है, उन्होंने कहा नही, नही ऐसा नही है,तो वो उसे जांचते हैं गलातियों 2 में, कहते हैं तुम ठीक हो,

और पहला कुरिन्थियो 15:11, वो कहता है कि चाहे मैं कहूँ या वो कहे, हम प्रचार करते हैं और तुम ने विश्वास किया, दूसरे शब्दों में, वो उन्हें भी देख रहा था, वो उनके संदेश से सहमत था, और वो इसे सहमती दे रहे थे, बात तो ये है, जो सुसमाचार प्रचार किया वो वही है, जिसमे मसीह का ईश्वरत्व है, उसकी मृत्यु, उसका जी उठना, ये बहुत महत्वपूर्ण और बहुत मजबूत बात है/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्न्‌ द्यद्द ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्धद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2017 ऋच्ड्ढक्ष्